

प्रारंभिक परीक्षा

भोजशाला परिसर

संदर्भ

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि धार स्थित भोजशाला-कमाल मौला परिसर एक सरस्वती मंदिर है और इस प्रकार विवादित स्थल पर हिंदू पूजा की अनुमति दी।

भोजशाला परिसर के बारे में

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: भोजशाला मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है, जिसकी स्थापना 1034 ईस्वी में परमार वंश (1000 और 1055 ईस्वी) के राजा भोज द्वारा की गई थी।
- शिक्षा का केंद्र: यह स्थल एक प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान के रूप में कार्य करता था जहाँ वाग्देवी की एक मूर्ति स्थापित की गई थी, जिनकी पहचान देवी सरस्वती के रूप में की जाती है।
 - भोजशाला ज्ञान, साहित्य और संस्कृत विद्या से जुड़ गई।
- आक्रमण: माना जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने 1305 ईस्वी में भोजशाला पर आक्रमण किया था। बाद में, 1514 ईस्वी में, महमूदशाह खिलजी द्वितीय ने इस संरचना को दरगाह में बदलने का प्रयास किया।
 - इस अवधि के दौरान, सरस्वती मंदिर से सटी भूमि पर कब्जा कर लिया गया और "कमाल मौलाना" का मकबरा बनाया गया।
- प्रशासन: 1952 में, भारत सरकार ने भोजशाला का प्रबंधन और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) को हस्तांतरित कर दिया।
- वास्तुकला: भोजशाला परिसर में एक विशाल खुला प्रांगण है जो स्तंभों वाले बरामदे से घिरा हुआ है, जबकि पश्चिमी तरफ एक प्रार्थना कक्ष स्थित है।
 - प्रार्थना कक्ष विशेष रूप से अपनी जटिल नक्काशीदार छत और गढ़े हुए स्तंभों के लिए उल्लेखनीय है, जिनमें से कई के बारे में माना जाता है कि वे मूल रूप से पूर्व की भोजशाला संरचना से संबंधित थे।
- साहित्यिक महत्व: चट्टानों पर उत्कीर्णन (शिलालेखों) में प्राकृत भाषा में दो श्लोक शामिल हैं जो भगवान विष्णु के कर्मावतार, या मगरमच्छ अवतार को समर्पित हैं।
- शिलालेख: स्थल पर 11वीं-12वीं शताब्दी के दो महत्वपूर्ण 'सर्पबंध' स्तंभ शिलालेख पाए गए हैं।
 - एक शिलालेख में संस्कृत वर्णमाला के साथ संज्ञाओं और क्रियाओं के मुख्य अंत (प्रत्यय) शामिल हैं, जबकि दूसरे में संस्कृत व्याकरण के दस कालों और भावों से संबंधित शब्दरूपों का उल्लेख है।

- **संस्कृत रचनाएँ:** स्तंभों में अनुष्टुप छंद में लिखी गई दो संस्कृत रचनाएँ भी शामिल हैं।
 - एक रचना में राजा भोज के उत्तराधिकारियों, उदयादित्य और नरवर्मन की प्रशंसा की गई है, जबकि दूसरी में उल्लेख है कि ये स्तंभ उदयादित्य के शासनकाल के दौरान स्थापित किए गए थे।

पीएम-श्री (PM-SHRI) योजना

संदर्भ

पश्चिम बंगाल ने हाल ही में पीएम-श्री योजना को लागू करने के लिए केंद्र के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

पीएम-श्री योजना के बारे में

- **परिचय:** पीएम-श्री (Pradhan Mantri Schools for Rising India - उभरते भारत के लिए प्रधानमंत्री स्कूल) एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसे 2022 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप 14,500 से अधिक मौजूदा स्कूलों को मॉडल संस्थानों के रूप में विकसित करने के लिए शुरू किया गया था।
- **अवधि:** यह योजना 2022-23 से 2026-27 तक लागू की जा रही है, जिसके बाद इसके रखरखाव की जिम्मेदारी संबंधित राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को हस्तांतरित कर दी जाएगी।
- **उद्देश्य:** इस पहल का उद्देश्य आधुनिक, समावेशी और उच्च गुणवत्ता वाले स्कूलों का निर्माण करना है जो नवीन शिक्षण विधियों और समग्र शिक्षण प्रथाओं का प्रदर्शन करते हों।
- **लाभार्थी:** इस योजना से पूरे भारत में 18 लाख से अधिक छात्रों को प्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलने की उम्मीद है।
- **वित्तपोषण स्वरूप:**
 - विधायिका वाले राज्य और केंद्र शासित प्रदेश: 60:40 (केंद्र-राज्य की हिस्सेदारी)
 - पूर्वोत्तर राज्य, हिमालयी राज्य और जम्मू एवं कश्मीर: 90:10
 - बिना विधायिका वाले केंद्र शासित प्रदेश: 100% केंद्रीय वित्तपोषण
- **चयन प्रक्रिया:** स्कूलों का चयन एक प्रतिस्पर्धी "चैलेंज मोड" (चुनौती आधारित) प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है जिसमें शामिल हैं:
 - राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्र सरकार के बीच समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर
 - UDISE+ मानकों के माध्यम से पात्र स्कूलों की पहचान
 - निर्दिष्ट मानदंडों पर मूल्यांकन और भौतिक सत्यापन
 - एक विशेषज्ञ समिति द्वारा अंतिम चयन
 - प्रत्येक ब्लॉक या शहरी स्थानीय निकाय से अधिकतम दो स्कूलों का चयन किया जाना है।

- **अवसंरचनात्मक सुविधाएँ:** पीएम-श्री स्कूल स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर और विज्ञान प्रयोगशालाओं, अटल टिकरिंग लैब्स, आईसीटी (ICT) सुविधाओं, डिजिटल पुस्तकालयों और व्यावसायिक शिक्षा प्रयोगशालाओं से सुसज्जित हैं।

पीएम मोदी की यूएई (UAE) यात्रा

संदर्भ

भारत और यूएई ने ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा सहयोग और बुनियादी ढाँचा निवेश पर प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

यात्रा के दौरान लिए गए प्रमुख निर्णय

- **रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (SPR) समझौता:** भारत और यूएई ने भारत के रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार में यूएई की भागीदारी को 30 मिलियन बैरल तक विस्तारित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- **रणनीतिक गैस भंडार सहयोग:** दोनों देश भारत में रणनीतिक गैस भंडार और एलएनजी/एलपीजी (LNG/LPG) भंडारण बुनियादी ढाँचा स्थापित करने में सहयोग करने पर सहमत हुए।
- **दीर्घकालिक एलपीजी आपूर्ति समझौता:** इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (IOCL) और एडनॉक (ADNOC) ने भारत को दीर्घकालिक एलपीजी आपूर्ति सुनिश्चित करने वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। (यूएई भारत के एलपीजी आयात के लगभग 40% की आपूर्ति करता है)।
- **रणनीतिक रक्षा भागीदारी ढाँचा:** भारत और यूएई ने रक्षा-औद्योगिक सहयोग, प्रौद्योगिकी साझाकरण, समुद्री सुरक्षा, साइबर रक्षा और सैन्य हार्डवेयर के संयुक्त विकास को कवर करने वाले एक रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- **बुनियादी ढाँचा और निवेश प्रतिबद्धताएँ:** यूएई ने भारत में बुनियादी ढाँचे, बैंकिंग और ऊर्जा क्षेत्रों में 5 अरब डॉलर के निवेश का संकल्प लिया।
- **पोत मरम्मत और समुद्री अवसंरचना:** समुद्री अवसंरचना सहयोग को मजबूत करते हुए, गुजरात के वाडिनार में पोत-मरम्मत क्लस्टर विकसित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा परामर्श:** दोनों नेताओं ने पश्चिम एशिया संघर्ष पर विचारों का आदान-प्रदान किया, जिसमें भारत ने यूएई पर हुए हमलों की निंदा की और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए समर्थन की पुष्टि की।

मुख्य परीक्षा

उभरती वैश्विक व्यवस्था में आर्थिक शासन

संदर्भ

वैश्वीकरण तेजी से रणनीतिक प्रतिस्पर्धा द्वारा आकार ले रहा है, जहाँ आपूर्ति श्रृंखलाएँ, प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र, महत्वपूर्ण खनिज और व्यापार नेटवर्क भू-राजनीतिक शक्ति के उपकरण बनते जा रहे हैं।

एक भू-आर्थिक विश्व व्यवस्था का उद्भव

- **अर्थव्यवस्था और सुरक्षा का संलयन:** टैरिफ, निर्यात नियंत्रण, प्रतिबंध और प्रौद्योगिकी प्रतिबंध जैसे आर्थिक उपकरण अब शासनकला के केंद्रीय साधन हैं।
 - उदाहरण: अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध, सेमीकंडक्टर प्रतिबंध, दुर्लभ-मृदा (रेयर-अर्थ) निर्यात नियंत्रण
- **दक्षता से लचीलेपन की ओर बदलाव:** देश पूर्णतः कम लागत वाले वैश्वीकरण के स्थान पर सुरक्षित और विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्राथमिकता दे रहे हैं। (उदाहरण: फ्रेंड-शोरिंग, नियर-शोरिंग, आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन पहल)
- **पारंपरिक बहुपक्षवाद का पतन:** विश्व व्यापार संगठन (WTO) के नेतृत्व वाले सार्वभौमिक व्यापार ढाँचे कमजोर हो रहे हैं क्योंकि देश तेजी से द्विपक्षीय और लघु-पक्षीय (मिनी-लेटरल) आर्थिक व्यवस्थाओं पर निर्भर हो रहे हैं।
 - उदाहरण: आईपीईएफ (IPEF), हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) भागीदारी, क्षेत्रीय आर्थिक गठबंधन
- **प्रौद्योगिकी और खनिजों का रणनीतिक महत्व:** सेमीकंडक्टर, एआई (AI), बैटरी और महत्वपूर्ण खनिज भू-राजनीतिक प्रभाव के निर्णायक स्रोतों के रूप में उभर रहे हैं। (उदाहरण: चिप्स (CHIPS) अधिनियम, लिथियम कूटनीति)
- **आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय:** प्रमुख शक्तियाँ रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित करने के लिए तेजी से औद्योगिक नीति, सब्सिडी और घरेलू विनिर्माण प्रोत्साहन का उपयोग कर रही हैं।
 - उदाहरण: अमेरिकी मुद्रास्फीति न्यूनीकरण अधिनियम (U.S. Inflation Reduction Act), यूरोपीय संघ (EU) की रणनीतिक स्वायत्तता नीतियाँ)

भारत को रणनीतिक महत्व क्यों मिल रहा है

- **वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र:** चीन से परे विविधीकरण की मांग करने वाली वैश्विक कंपनियाँ भारत को एक बड़े और अपेक्षाकृत स्थिर उत्पादन आधार के रूप में देखती हैं। (उदाहरण: एप्पल (Apple) की आपूर्ति-श्रृंखला का विस्तार, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण विकास)
- **जनसांख्यिकीय और बाजार लाभ:** भारत एक बड़े कार्यबल के साथ दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते उपभोक्ता बाजारों में से एक को जोड़ता है।

- **डिजिटल गवर्नेंस मॉडल:** भारत का डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) मॉडल विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त शासन ढाँचे के रूप में उभर रहा है। (उदाहरण: यूपीआई (UPI), आधार (Aadhaar), डिजिलॉकर (DigiLocker))
- **प्रौद्योगिकी और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र:** भारत एआई (AI), ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC), सेमीकंडक्टर डिजाइन और इंजीनियरिंग सेवाओं के लिए एक प्रमुख केंद्र बन रहा है।
 - उदाहरण: भारत 2,117 जीसीसी (GCC) और 250 से अधिक एआई/एमएल (AI/ML) उत्कृष्टता केंद्रों की मेजबानी करता है।
- **लोकतांत्रिक रणनीतिक भागीदार:** अनिश्चित भू-राजनीतिक परिवेश में भारत को तेजी से एक विश्वसनीय लोकतांत्रिक विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

भारत की भू-आर्थिक रणनीति

- **बहु-सरेखण (मल्टी-अलाइनमेंट) कूटनीति:** भारत किसी विशिष्ट गुट में शामिल हुए बिना आर्थिक साझेदारी में विविधीकरण कर रहा है। (अमेरिका, यूरोपीय संघ, खाड़ी देशों, आसियान, रूस और ग्लोबल साउथ के साथ एक साथ जुड़ाव)
- **आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन नीतियां:** घरेलू विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करना और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सुभेद्यताओं को कम करना। (उदाहरण: पीएलआई (PLI) योजनाएं, सेमीकंडक्टर मिशन, लॉजिस्टिक्स सुधार)
- **प्रौद्योगिकी भागीदारी:** भारत सेमीकंडक्टर, एआई, दूरसंचार और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों में रणनीतिक सहयोग को गहरा कर रहा है। (उदाहरण: भारत-अमेरिका सेमीकंडक्टर पहल, क्वाड (Quad) की महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियां)
- **महत्वपूर्ण खनिज आउटरीच:** लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ-मृदा आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने के लिए विदेशी संसाधन साझेदारी का निर्माण करना। (उदाहरण: ऑस्ट्रेलिया और अर्जेंटीना के साथ समझौते)
- **विदेश नीति उपकरण के रूप में आर्थिक कूटनीति:** व्यापार समझौतों और कनेक्टिविटी परियोजनाओं को तेजी से रणनीतिक नीति में एकीकृत किया जा रहा है। (उदाहरण: आईएमईसी (IMEC) कॉरिडोर, यूईई और ऑस्ट्रेलिया के साथ मुक्त व्यापार समझौते (FTA))

भारत के सामने संरचनात्मक चुनौतियाँ

- **आयात निर्भरता:** भारत सेमीकंडक्टर, महत्वपूर्ण खनिजों और उन्नत प्रौद्योगिकियों के लिए बाहरी स्रोतों पर निर्भर है।
- **अवसंरचना और लॉजिस्टिक्स बाधाएँ:** उच्च लॉजिस्टिक्स लागत और असमान औद्योगिक बुनियादी ढाँचा प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करते हैं। (लॉजिस्टिक्स लागत जीडीपी का लगभग 13-14% है)
- **कमजोर अनुसंधान एवं विकास (R&D) पारिस्थितिकी तंत्र:** अनुसंधान और नवाचार में कम निवेश तकनीकी नेतृत्व को बाधित करता है। (आरएंडडी व्यय जीडीपी का लगभग 0.7% है)

- **सीमित उच्च-स्तरीय (हार्ड-एंड) विनिर्माण:** उन्नत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत का एकीकरण पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं से नीचे बना हुआ है।
- **भू-राजनीतिक दबावों को संतुलित करना:** प्रतिस्पर्धी शक्तियों के साथ एक साथ जुड़ने से कूटनीतिक और आर्थिक बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

आगे की राह

- **प्रतिस्पर्धी विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण:** लॉजिस्टिक्स, औद्योगिक समूहों, व्यापार सुगमता और ऊर्जा विश्वसनीयता में सुधार करना।
- **नवाचार क्षमता को सुदृढ़ करना:** अनुसंधान एवं विकास (R&D), सेमीकंडक्टर, एआई और उभरती प्रौद्योगिकियों में निवेश का विस्तार करना।
- **रणनीतिक व्यापार भागीदारी को गहरा करना:** विविध एफटीए (FTA) और लचीले आपूर्ति-श्रृंखला गठबंधनों को आगे बढ़ाना।
- **कुशल मानव पूंजी का विकास:** उच्च शिक्षा और कौशल विकास को उन्नत विनिर्माण और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों के साथ संरेखित करना।
- **रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना:** किसी एक शक्ति गुट पर अत्यधिक निर्भरता से बचते हुए विविध आर्थिक जुड़ाव बनाए रखना।

